पुस्तक का नाम	रहने दो रिपोर्टर
प्रकाशक	मनसा पब्लिकेशन्स 2/256 विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010 फोन नं. 0522–4029598
संस्करण	प्रथम –2009
मूल्य	रुपये मात्र– 175/–
सर्वाधिकार सुरक्षित	मनसा पब्लिकेशन्स 2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010
	ISBN- 978-81-907255-6-9

RAHANE DO REPORTER
By- Kusum Narayan 'Narayani'

मनसा पब्लिकेशन्स

2/256 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-२२६०१०
फोन नं०- (0522) 4029598
ईमेल- manasapublications2007@rediffmail.com

अपनी बात

रहने दो रिपोर्टर! जैसे लगा कि खुद के लिये अपने अन्तः से एक स्वर उभरा! अब तक लगभग २०० कहानियाँ, कई उपन्यास लिखकर भी अपने आस-पास समाज में किसी संवेदना को जगह नहीं मिल रही।

मैं अपने आस-पास की मानवीय संवेदना को शब्द देकर उन्हें खुद पाठक के समक्ष रखती हूँ ताकि मुझ जैसे आम दर्द को जगह मिले, पर नहीं..... रोज ही रिश्तों की कड़ुवाहट, बड़े बुजुर्गों की उपेक्षा, जाति/धर्म की चौड़ी होती खाई, भ्रूण हत्या, बाल-मजदूरी जैसे अपराध बढ़ते जा रहे हैं। मीडिया की सक्रियता अवश्य बढ़ी है। खबरों में तार-तार साफ दिख रहे पर शायद व्यवसायिक मानसिकता उन्हें (T.R.P.) बढ़ाने में घटना को महिमा-मण्डित कर हमारी संवेदना की जगह घृणा, स्नेह की जगह ईर्ष्या पैदा कर रही है। बदलाव अवश्य हो रहा है पर सहजता/सहभागिता का अश्क धुंधला पड़ता जा रहा है। चमक-दमक की तीखी रोशनी में सब कुछ धूमिल होता जा रहा है। बस! रहने दो रिपोर्टर! पर मैं कलमकार हूँ मैं तो लिखूँगी। आप बदले न बदले..... पर लिखना मेरा जीवन है। आज नहीं तो कल..... कहीं कुछ भी बदला तो ।

अन्दर कुछ टूटता है कि क्या शब्द बेअसर हैं इनमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि.....। शब्द ब्रह्म है जो कभी मरता नहीं..... इसी विश्वास से कलम पकड़ पाती हूँ कि कभी तो यह जागृत होगा और शब्दों की सामर्थ्य नहीं समाज की इस कलुषता को दूर कर धवलता प्रदान करेगी।

कुसुम नारायण 'नारायणी'

अनुक्रम

१.	रहने दो रिपोर्टर	7–15
२.	कायापलट	16–23
३.	अपहरण	24–30
४.	फूल सदाबहार के	31–35
५.	अगरबत्ती	36–46
६.	केवट पुत्र	47–53
७.	गमक उठा पारिजात	54–59
८.	सूत्रधार	60–68
९.	अजनबी घर में	69–78
१०.	मोहभंग	79–88
११.	एक शब्द उधार का	89–98
१२.	कविता कमनीय	99–112
१३.	मन मृग बसी कस्तूरी गंध	113–136
१४.	यस सर	137–143

पूनम और आलोक के लिए